वीरांगना रमोतिन माड़िया आदर्श महिला महाविद्यालय नारायणपुर

नारीवाद

समानता का अधिकार, नारी का स्वाभिमान

नारीवाद क्या है?

नारीवाद एक सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार, सम्मान और अवसर प्रदान करना है।

भारत में नारीवाद

भारत में नारीवाद का विकास सामाजिक सुधार आंदोलनों से हुआ। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के लिए कार्य किया।

नारीवाद के प्रकार

- उदारवादी नारीवाद समान अधिकार और अवसर पर बल देता है।
- समाजवादी नारीवाद आर्थिक शोषण और वर्गभेद को महिलाओं की समस्या का कारण मानता है।
- उग्रवादी नारीवाद पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध करता है।
- आधुनिक नारीवाद लैंगिक समानता, स्वतंत्रता और महिला सशक्तिकरण पर बल देता है।

निष्कर्ष

नारीवाद समाज में समानता, स्वतंत्रता और न्याय की स्थापना का महत्वपूर्ण माध्यम है। महिलाओं को समान अवसर और सम्मान देकर ही एक विकसित और प्रगतिशील समाज का निर्माण किया जा सकता है।

नारीवाद के उद्देश्य

- महिलाओं को समान अधिकार दिलाना।
- शिक्षा और रोजगार में समान अवसर।
- घरेलू हिंसा और दहेज प्रथा का विरोध।
- राजनीतिक भागीदारी बढ़ाना।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना।

नारीवाद का महत्व

- समाज में समानता स्थापित होती है।
- महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ता है।
- सामाजिक कुरीतियों में कमी आती है।
- राष्ट्र के विकास में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है।

नारीवाद की चुनौतियाँ

→ पितृसत्तात्मक सोच
→ लैंगिक भेदभाव
→ घरेलू हिंसा
→ बाल विवाह और दहेज प्रथा
→ ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा

नाम - सुमित्रा मण्डावी
कक्षा - B.A. IV Sem

टीचर का हस्ताक्षर

विद्यार्थी का हस्ताक्षर

Sumitra